मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 2022007062

डीजी मुखमीत सिंह व दीपक कुमार मेडिकल कॉलेज में याद रखे जायेंगे 2
भाजपा विपक्ष को कुचलने का कर रही है प्रयास 4
संविधान और तिरंगे के बारे में 1949 में क्या सोचता था संघ 5
हिन्दू राष्ट्र पोस्टर को लेकर रवीश कुमार ने किया पीएम मोदी से सवाल 6
आखिर संतनगर के राजकीय प्राइमरी स्कूल की छत गिर ही गयी 8

वर्ष 36 | अंक 39 | फरीदाबाद | 7-13 अगस्त 2022 | फोन-8851091460 | ₹ 5.00

ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल में बोन मैरो ट्रांस्प्लांट के 11 सफल केस

फरीदाबाद में ब्लड कैंसर का सफल इलाज

फ़रीदाबाद (म.मो.) यूं तो कैंसर एक जानलेवा बीमारी है लेकिन इसमें भी ब्लड कैंसर तो सबसे घातक बीमारी मानी गई है। गरीब आदमी का तो इसमें मरना तय ही माना जाता है। हां, यदि 40-50 लाख रुपये खर्च करने को हों तो व्यापारिक अस्पतालों में जरूर जान बचने की सम्भावना रहती है।

इस घातक बीमारी से पीड़ित ईएसआई कवर्ड मज़दूरों के लिये एनएच 3 स्थित ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल में इसका इलाज शुरू कर दिया गया है। इसकी शुरूआत 16 अगस्त 2021 से हुई थी। समाचार लिखे जाने तक यहां से 10 मरीज़ ठीक होकर जा चुके हैं और 11 वें मरीज़ का इलाज चल रहा है।

इस बीमारी के इलाज की प्रक्रिया किसी एक डॉक्टर के हाथ में नहीं होती बल्कि श्रेष्ठ विशेषज्ञ डॉक्टरों की एक पूरी टीम तथा सुप्रशिक्षित पैरा मेडिकल स्टाफ की आवश्यकता होती है। इस अस्पताल में अनुभवी ओंकालॉजिस्ट डॉ. राय, ब्लड बैंक की संचालक एवं हेमाटॉलोजिस्ट डॉ. नीमीशा, पैथोलॉजिस्ट डॉ. ....तथा कुछ अन्य विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम मौजूद है। उक्त इन डॉक्टरों में कमी थी तो टीम के कैप्टन की जो इन सभी समर्पित विशेषज्ञों को जोड़ कर इस प्रक्रिया को पूरा कर सके।

दूसरी ओर डॉ. राहुल भार्गव जो इस प्रक्रिया के माहिर हैं तथा सैकड़ों केस कर चुके हैं, उन्हें ऐसी ही टीम की तलब थी जो गरीब मरीज़ों को मुफ्त इलाज दे सके। डॉ. भार्गव फोर्टिस गुड़गांव जैसे व्यापारिक अस्पताल तथा कुछ अन्य अस्पतालों में बहुत ऊंचे वेतन पर काम करते हैं।

लेकिन समाज के लिये मुफ्त काम करने की तमन्ना सर्व प्रथम उन्हें दिल्ली स्थित ईएसआई के बसई दारापुर अस्पताल में ले गई। लेकिन वहां का हाल तो पहले से ही चौपट हुआ पड़ा था लिहाजा वहां किसी ने भी इनकी कदर न की। उसके बाद 2021 में डॉ. भार्गव पहुंचे ईएसआई कार्पोरेशन के डायरेक्टर जनरल मुखमित सिंह भाटिया के पास।

डॉ. राहुल भार्गव

डॉ. भार्गव का प्रस्ताव मिलते ही डीजी भाटिया का ध्यान एकदम से फ़रीदाबाद के मेडिकल कॉलेज पर गया। उन्होंने तुरन्त डीन डॉ. असीम दास से बात करी। डॉ. दास के लिये तो यह बात ऐसी थी कि अंधा क्या मांगे दो आंखें। उन्होंने तुरन्त प्रस्ताव स्वीकार करते हुए आवश्यक तैयारियां शुरू कर दीं। उनके पास पहले से ही समर्पित फेकल्टी भी इस प्रस्ताव से बहुत खुश हुई क्योंकि ये सब लोग कामचोर न होकर दिल लगा कर काम करने वाले लोग हैं।

बातचीत में डॉ. भार्गव ने बताया कि इलाज की प्रक्रिया के लिये सर्वप्रथम हेपाफिल्टर युक्त आइसोलेशन कमरे की आवश्यकता होती है ताकि कमरे में सूक्ष्म से भी सूक्ष्म कोई कण अथवा बैक्टीरिया आदि प्रवेश न कर सके। इस कमरे में मरीज़ को करीब 25 दिन रखा जाता है। शुरू में एक कमरे में एक ही मरीज़ रखा गया था, बाद में दो रखने लगे। काम बढ़ा तो ऐसा ही और कमरा तैयार किया गया। जिस रफ्तार से चंडीगढ़, दिल्ली व अन्य स्थानों से मरीज़ आने लगे हैं, कमरों की संख्या बढ़ानी पड़ेगी।

इसके लिये प्रशिक्षित नर्सिंग व अन्य स्टाफ़ की जरूरत को समझते हुए डॉ. भार्गव ने इस अस्पताल की आठ नर्सों को ट्रेनिंग के लिये अपने फोर्टिस अस्पताल में भी दो सप्ताह के लिये भेजा था। ये ट्रेंड नर्सें अपने काम के साथ-साथ अन्य स्टाफ़ को भी ट्रेंड कर रही हैं। डॉ. भार्गव का मानना है कि जिस तरह से यहां मरीज़ पहुंचने लगे हैं उसे देखते हुए यहां पूरा सेंटर ऑफ़ एक्सिलेंस बनाना पड़ेगा जिसके लिये 50 से 100 कमरों तक की आवश्यकता होगी। एक सीधे सवाल के जवाब में डॉ. भार्गव ने बताया कि वे न तो इस अस्पताल की नौकरी में हैं और न ही प्रति केस के हिसाब से कोई फ़ीस लेते हैं। केवल आवागमन के खर्च के तौर पर मात्र 6 हजार रुपये लेते हैं और सप्ताह में एक दिन यहां लगाते हैं। उनकी हार्दिक इच्छा है कि उनके साथ काम करने वाले युवा डॉक्टर इस प्रक्रिया को अच्छे से सीख कर अपने मरीज़ों की सेवा कर सकें।

संबंधित खबरें पेज दो पर

पंजाब के स्वास्थ्यमंत्री ने अपने अस्पतालों की सुध ली, हरियाणा वाले कब लेंगे ?

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

जनता से लगातार शिकायतें मिलने के बाद पंजाब के स्वास्थ्य मंत्री चेतन सिंह ने दिनांक 29 जुलाई को फरीदकोट स्थित अपने मेडिकल कॉलेज विश्व-विद्यालय का औपचारिक निरीक्षण किया। इस दौरान इनके साथ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. राज बहादुर भी साथ रहे। वार्ड में बेड पर बिछे सड़े-गले गद्दे देख कर मंत्री ने कुलपति से कहा कि सर, क्या आप इस गद्दे पर लेट सकते हैं? शरमा-शरमी डॉ. राज बहादुर एकाध मिनट के लिये इस पर लेट तो गये लेकिन इससे अपमानित होकर उन्होंने पद से त्यागपत्र दे दिया।

जन विरोधी राजनीति से प्रेरित कांग्रेस पार्टी, भारतीय जनता पार्टी व अकाली दल

पंजाब के स्वास्थ्य मंत्री चेतन सिंह

हरियाणा के स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज

ने अस्पताल की दुर्दशा को मुद्दा बनाने की बजाय कुलपति के तथाकथित अपमान को मुद्दा बनाकर स्वास्थ्य मंत्री सहित पूरी पंजाब सरकार को ही निशाने पर ले लिया। कुलपति के समर्थन तथा मंत्री के विरोध में बयानबाज़ी शुरू कर दी। इससे प्रेरित होकर डॉक्टरों के विभिन्न संगठनों के साथ-साथ अस्पताल के कुछ कर्मचारी भी धरने-प्रदर्शन पर उतर आये। इन सब के लिये अस्पताल की दुर्दशा कोई मुद्दा नहीं है, मुद्दा है तो केवल कुलपति का अपमान जो कि हुआ नहीं। मंत्री ने उन्हें पकड़ कर जबरन तो बेड पर लिटाया नहीं था, उन्होंने तो बाकायदा 'सर' कह कर उन्हें जरा लेट कर दिखाने को कहा था। वे चाहते तो लेटने से इनकार भी कर सकते थे।

मंत्री से बात-चीत के दौरान कुलपति इस स्थिति के लिये अस्पताल के अधीक्षक को दोषी बता कर अपने आप को बरी करते रहे। माना कि अस्पताल का प्रबन्धन चिकित्सा अधीक्षक का दायित्व होता है लेकिन जब वह दायित्व ठीक से न निभा रहा हो तो उस पर कार्रवाई करने का दायित्व कुलपति पर नहीं तो क्या सीधे मंत्री अथवा मुख्यमंत्री का बनेगा? यदि उन्होंने ही सब कुछ करना है तो डॉ. राज बहादुर जैसे कुलपति को पालने-पोसने की क्या जरूरत है?

सर्वविदित है कि विश्वविद्यालय एक स्वायत्त संस्थान होता है। इसमें कुलपति ही सर्वे-सर्वा होता है। यहां के तमाम अधिकारी उन्हें जवाबदेय होते है। संस्थान का एक पैसा भी उनकी मर्जी के बगैर खर्च नहीं किया जा सकता। संस्थान में तमाम तरह की नियुक्तियां भी उन्हीं के आदेश पर होती हैं।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार करीब एक वर्ष पूर्व 400 चादरों व गद्दों की खरीदारी का आदेश जारी किया गया था जो आज तक क्रियान्वित नहीं हो पाया है। समझा जाता है कि संस्थान खरीद्दारी एवं रख-रखाव के मामलों में भारी घोटालों

शेष पेज 3 पर